DAWAT-E-ISLAMI

रिसाला नम्बर : 137

Imame Hasan Ki 30 Hikayaat (Hindi)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

इमामे हसन की 30 हिकायात

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

इमामे ह़सन की 30 ह़िकायात

येह रिसाला (**इमामे ह़सन की 30 ह़िकायात**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की 30 ह़िकायात

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला पूरा पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात के साथ साथ ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत दिल में मौजें मारने लगेगी ।

दुरूदे पाक लिखने की ब-र-कत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास उक़्लीशी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में जन्नत में देखा। पूछा : आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह मक़ाम कैसे पाया ? जवाब दिया : अपनी किताब "अल अर-बईन" में कसरत से दुरूद शरीफ़ लिखने की वज्ह से। (القول البدیع ص٤٦٧ مُلَخّصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ ख़ुश्क दरख़्त पर ताज़ा खजूरें

आ़रिफ़ बिल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना नूरुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़र के दौरान **खजूरों के बाग़** से गुज़रे जिस के तमाम दरख़्त ख़ुश्क हो चुके थे, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا भी इस सफ़र में साथ थे । ह़ज़रते इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस बाग़ में पड़ाव डाला (या'नी क़ियाम किया) । ख़ुद्दाम ने एक सूखे दरख़्त के नीचे आराम के लिये बिछोना बिछा दिया । ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अ़र्ज़ की : ऐ नवासए रसूल ! काश ! इस सूखे दरख़्त पर ताज़ा खजूरें होतीं ! कि हम सैर हो कर खाते । येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने आहिस्ता आवाज़ में कोई दुआ पढ़ी, जिस की ब-र-कत से चन्द लम्ह़ों में वोह सूखा दरख़्त सर सब्ज़ो शादाब हो गया और उस में ताज़ा पक्की खजूरें आ गईं । येह मन्ज़र देख कर एक शुतुरबान (या'नी ऊंट हांकने वाला) कहने लगा : येह सब जादू का करिश्मा है । ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने उसे डांटा और फ़रमाया : तौबा कर, येह जादू नहीं बल्कि शहज़ादए रसूल की दुआए मक़्बूल है । फिर लोगों ने दरख़्त से खजूरें तोड़ीं और क़ाफ़िले वालों ने ख़ूब खाईं ।

(شواهدُ النّبوة ص۲۲۷)

राकिबे दोशे शहन्शाहे उमम या ह़सन इब्ने अ़ली ! कर दो करम !
फ़ात़िमा के लाल ह़ैदर के पिसर ! अपनी उल्फ़त दो मुझे दो अपना ग़म

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ विलादत से क़ब्ल बिशारत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चचीजान ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मुल फ़ज़्ल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आप से अपना ख़्वाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के मुबारक जिस्म का ह़िस्सा मेरे घर आया है ।" येह सुनते ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने अच्छा ख़्वाब देखा, **फ़ातिमा** के यहां बेटा पैदा होगा और तुम उसे दूध पिलाओगी ।" जब ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हां ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की विलादत हुई तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मुल फ़ज़्ल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को दूध पिलाया । (الذرية الطاهرة للدولابی ص٧٢)

विलादते बा सआ़दत व नाम व अल्क़ाब

इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुमाम, इमामे अ़र्श मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की विलादते बा सआ़दत 15 **र-मज़ानुल मुबारक** 3 हिजरी में हुई । (الطبقات الكبير لابن سعد ج٦ ص٣٥٢) आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का मुबारक नाम : **ह़सन**, कुन्यत : अबू मुह़म्मद और अल्क़ाब : तक़ी, सय्यिद, सिब्ते रसूलुल्लाह और सिब्ते अक्बर है, आप को रैह़ा-नतुर्रसूल (या'नी रसूले ख़ुदा के फूल) भी कहते हैं ।

क्या बात रज़ा उस च-मनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में ह़ुसैन और ह़सन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

हम-शक्ले मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि (इमामे) **ह़सन** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) से बढ़ कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलता जुलता कोई भी शख़्स न था ।

(بُخاری ج۲ص۵۴۷حدیث ۳۷۵۲)

ऐसा बेटा किसी मां ने नहीं जना !

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا भी दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की त़रह़ नवासए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से बहुत मह़ब्बत फ़रमाते थे । एक मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! औ़रतों ने **ह़सन बिन अ़ली** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) जैसा फ़रज़न्द नहीं जना ।"

(سبلُ الهدی ج۱۱ص۶۹)

शफ़्क़ते मुस्त़फ़ा मरह़बा ! मरह़बा !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से बहुत मह़ब्बत थी । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कभी आग़ोशे शफ़्क़त (या'नी मुबारक गोद) में उठाए तो कभी दोशे अक़्दस (या'नी मुबारक कन्धों) पर सुवार किये हुए घर शरीफ़ से बाहर तशरीफ़ लाते, कभी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को

देखने और प्यार करने के लिये सय्यिदह फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर शरीफ़ पर तशरीफ़ ले जाते, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बेह़द मानूस हो (या'नी हिल) गए थे कि कभी नमाज़ की ह़ालत में मुबारक पीठ पर सुवार हो जाते ।

﴾3﴿ राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा

एक मर्तबा हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को शानए अक़्दस (या'नी मुबारक कन्धे) पर सुवार किये हुए थे तो एक साह़िब ने अ़र्ज़ की : نِعْمَ الْمَرْكَبُ رَكِبْتَ يَا غُلَام या'नी साह़िब ज़ादे ! आप की सुवारी तो बड़ी अच्छी है । रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَنِعْمَ الرَّاكِبُ هُوَ या'नी सुवार भी तो कैसा अच्छा है ! (ترمذی ج۵ص۴۳۲حدیث۳۸۰۹)

वोह ह़सन मुज्तबा, सय्यिदुल अस्ख़िया
राकिबे दोशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 309)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ अबू हुरैरा देखते तो रो पड़ते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं जब (इमामे) **ह़सन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को देखता तो मेरी आंखों से आंसू जारी हो

जाते और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक दिन बाहर तशरीफ़ लाए मुझे मस्जिद में देखा, मेरा हाथ पकड़ा, मैं साथ चल पड़ा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से कोई बात न की यहां तक कि हम बनू क़ैनुक़ाअ़ के बाज़ार में दाख़िल हुए और फिर हम वहां से वापस आए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "छोटा बच्चा कहां है, उसे मेरे पास लाओ !" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने देखा, (इमामे) **ह़सन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه आए प्यारे **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गोद में बैठ गए, सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बान मुबारक उन के मुंह में डाल दी और तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं इसे मह़बूब (या'नी प्यारा) रखता हूं तू भी इसे मह़बूब (या'नी प्यारा) रख और जो इस से मह़ब्बत करता हो उसे भी मह़बूब (प्यारा) रख।" (الادب المفرد ص٣٠٤حديث١١٨٣)

फ़ातिमा के लाल ह़ैदर के पिसर !

अपनी उल्फ़त दो मुझे दो अपना ग़म

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ ऐ मेरे सरदार !

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद मक़्बुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ थे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी वहां तशरीफ़ लाए और

हमें सलाम किया, हम ने सलाम का जवाब दिया लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को (सलाम करने का) पता न चला। हम ने अ़र्ज़ की : ऐ अबू हुरैरा ! (ह़ज़रते इमामे) **ह़सन बिन अ़ली** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने हमें सलाम किया है तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़ौरन (ह़ज़रते इमामे) **ह़सन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की जानिब मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا سَيِّدِی! या'नी ऐ मेरे सरदार ! आप पर भी सलामती हो। मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है कि बेशक **ह़सन** "सय्यिद" (या'नी सरदार) है। (المستدرك ج٤ص١٦١حديث٤٨٤٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿6﴾ येह मेरा फूल है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्रह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें नमाज़ पढ़ा रहे थे कि (ह़ज़रते इमामे) **ह़सन बिन अ़ली** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जो अभी छोटे से थे तशरीफ़ लाए। जब भी रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सज्दा फ़रमाते (ह़ज़रते इमामे) **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गरदन शरीफ़ और पीठ मुबारक पर बैठ जाते। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم निहायत आराम से अपना सरे अक़्दस सज्दे से उठाते और उन्हें शफ़्क़त से उतारते। जब नमाज़ मुकम्मल कर ली तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस बच्चे से आप

इस अन्दाज़ से पेश आते हैं कि किसी और से ऐसा सुलूक नहीं फ़रमाते ? इर्शाद फ़रमाया : "येह दुन्या में मेरा फूल है।"

(مسند بزار ج۹ص۱۱۱ حدیث۳۶۵۷ ملخصاً)

उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं

कीजे रज़ा को ह़श्र में ख़न्दां मिसाले गुल

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

7 मेरा येह बेटा सरदार है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्रह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर पर जल्वागर थे और (इमाम) **ह़सन बिन अ़ली** (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलू (या'नी बराबर) में थे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी लोगों की त़रफ़ तवज्जोह करते और कभी (इमामे) **ह़सन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ नज़र फ़रमाते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरा येह बेटा **सय्यिद** (या'नी सरदार) है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की बदौलत मुसल्मानों की दो बड़ी जमाअ़तों में सुल्ह़ फ़रमाएगा।"

(بخاری ج۲ ص۲۱۴ حدیث ۲۷۰۴)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

﴾8﴿ इमामे ह़सन मुज्तबा की ख़िलाफ़त

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शहादत के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मस्नदे ख़िलाफ़त पर जल्वा अफ़रोज़ हुए तो अहले कूफ़ा ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने वहां कुछ अ़र्सा क़ियाम फ़रमाया फिर चन्द शराइत़ के साथ उमूरे ख़िलाफ़त ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को सिपुर्द फ़रमा दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने तमाम शराइत़ क़बूल कीं और बाहम सुल्ह़ हो गई। यूं ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मो'जिज़ा ज़ाहिर हुवा जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे इस फ़रज़न्द की बदौलत मुसल्मानों की दो जमाअ़तों में सुल्ह़ फ़रमाएगा।

(सवानेह़े करबला, स. 96 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ इमामे ह़सन मुज्तबा का ख़ुत़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की बैअ़त कर ली और उमूरे ख़िलाफ़त उन के सिपुर्द फ़रमा दिये तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे

मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के कूफ़े आने से पहले आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने लोगों से ख़ित़ाब करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! बेशक हम तुम्हारे मेहमान हैं और तुम्हारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले बैत हैं कि जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर क़िस्म की नापाकी दूर कर दी और उन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दिया।" येह कलिमात (या'नी जुम्ले) आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बार बार दोहराए ह़त्ता कि मजलिस में मौजूद हर शख़्स रोने लगा और उन के रोने की आवाज़ दूर तक सुनी गई। (बरकाते आले रसूल, स. 138)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ दुन्या की शर्म अ़ज़ाबे आख़िरत से बेहतर है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब ख़िलाफ़त से दस्त बरदार हो गए तो बा'ज़ ना वाक़िफ़ लोग आप को **या आ़रल मुअमिनीन** (या'नी ऐ मुसल्मानों के लिये बाइसे शर्म) कह कर पुकारते, इस पर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते : "आ़र, नार से (या'नी दुन्या की येह शर्म अ़ज़ाबे आख़िरत से) बेहतर है।" (الاستیعاب ج ۱ ص ۴۳۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब से पहले ग़ौसे आ'ज़म

इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की आ़जिज़ी मरह़बा ! तर्के ख़िलाफ़त के सिले में, **अल्लाह तआ़ला** ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ग़ौसे आ'ज़म का रुत्बा अ़त़ा फ़रमाया। जैसा कि **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

28 सफ़ह़ा 392 पर अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ह़-नफ़ी मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی के ह़वाले से नक़्ल हैं : "बेशक मुझे अकाबिर (या'नी बुज़र्गों) से पहुंचा कि सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने जब ब ख़याले फ़ितना व बला (या'नी मुसल्मानों में फ़साद ख़त्म करने के ख़याल से) येह ख़िलाफ़त तर्क फ़रमाई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस के बदले इन में और इन की औलादे अम्जाद में ग़ौसिय्यते उ़ज़्मा का मर्तबा रखा। पहले क़ुत़्बे अक्बर (ग़ौसे आ'ज़म) ख़ुद हुज़ूर सय्यिदुना इमामे **ह़सन** हुए और औसत़ (या'नी बीच) में सिर्फ़ हुज़ूर सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर और आख़िर में ह़ज़रते इमाम महदी होंगे।" رضی اللہ تعالٰی عنہم اَجْمَعِیْن।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 28, स. 392)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़िलाफ़ते राशिदा

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ख़लीफ़ए बरह़क़ व इमामे मुत़्लक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़, फिर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी, फिर ह़ज़रते मौला अ़ली फिर छ[6] महीने के लिये ह़ज़रते इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم हुए, इन ह़ज़रात को ख़ु-लफ़ाए राशिदीन और इन की ख़िलाफ़त को ख़िलाफ़ते राशिदा कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 241)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

﴾11﴿ ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस से मह़ब्बत करता हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (इमामे) **ह़सन बिन अ़ली** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को कन्धे पर उठाए हुए हैं और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कर रहे हैं : اَللّٰهُمَّ اِنِّی اُحِبُّهٗ فَاَحِبَّهٗ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस से मह़ब्बत करता हूं तू भी इस से मह़ब्बत फ़रमा। (ترمذی ج ٥ ص ٤٣٢ حدیث ٣٨٠٨)

या ह़सन ! अपनी मह़ब्बत दीजिये !
इ़श्क़ में अपने हमें गुम कीजिये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ मुन्ने की पैदाइश

आ़रिफ़ बिल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना नूरुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی (वफ़ात : 989 हि.) नक़्ल फ़रमाते हैं : एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज के मौक़अ़ पर मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا पैदल तशरीफ़ ले जा रहे थे कि दौराने सफ़र आप के पाउं मुबारक में सूजन आ गई, ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : ह़ुज़ूर ! किसी सुवारी पर सुवार हो जाइये ताकि क़दमों की सूजन कम हो जाए, इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ग़ुलाम की दर-ख़्वास्त क़बूल न की और फ़रमाया : जब अपनी मन्ज़िल पर पहुंचो तो वहां तुम्हें एक ह़बशी

मिलेगा, उस के पास तेल होगा, तुम उस से वोह तेल ख़रीद लेना। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम ने कहा : मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! हम ने किसी भी जगह कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जिस के पास ऐसी दवा हो। इस जगह कहां दस्त-याब होगी ? जब वोह अपनी मन्ज़िल पर पहुंचे तो वोह ह़बशी दिखाई दिया। इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह वोही ह़बशी है जिस के बारे में तुम से कहा था, जाओ उस से तेल ख़रीदो और क़ीमत अदा करो। ग़ुलाम जब तेल ख़रीदने के लिये ह़बशी के पास गया और तेल का पूछा तो ह़बशी ने पूछा : किस के लिये ख़रीद रहे हो ? ग़ुलाम ने कहा : इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये। ह़बशी ने कहा : मुझे इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ले चलो, मैं उन का ग़ुलाम हूं। जब ह़बशी ह़ज़रते इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया तो अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं आप का ग़ुलाम हूं, आप से तेल की क़ीमत नहीं लूंगा, मेरी बीवी दर्दे ज़ेह में मुब्तला है, दुआ़ फ़रमाएं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़फ़िय्यत के साथ औलाद अ़त़ा फ़रमाए। ह़ज़रत इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : घर जाओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें वैसा ही बच्चा अ़त़ा फ़रमाएगा जैसा तुम चाहते हो और वोह हमारा पैरव-कार रहेगा। ह़बशी घर पहुंचा तो घर की ह़ालत वैसी ही पाई जैसी उस ने इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सुनी थी। **(شواهد النبوة ص ۲۲۷)**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

﴾13﴿ सुरमा व ख़ुश्बू से मेहमानी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने निकाह़ की दा'वत में शिर्कत के लिये (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम) **ह़सन बिन अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को पैग़ाम भिजवाया। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ लाए तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने साथ मस्नद पर बिठाया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बताया : मेरा रोज़ा है, अगर मेरे इ़ल्म में येह बात पहले आ जाती कि आप दा'वत फ़रमाएंगे तो मैं (नफ़्ल) रोज़ा न रखता। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : आप चाहें तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये वोही एहतिमाम किया जाए जो एक रोज़ेदार के लिये किया जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : रोज़ादार के लिये क्या एहतिमाम किया जाता है ? इर्शाद फ़रमाया : "वोह येह कि रोज़ादार को सुरमा और ख़ुश्बू लगाई जाए।" फिर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुरमा और ख़ुश्बू मंगवाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह दोनों चीज़ें लगाई गईं। (تاریخ المدینة المنورة،جزء۳ص۹۸٤)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! इस ह़िकायत से हमें येह म-दनी फूल ह़ासिल हुवा : अगर मुसल्मान पहले से खाने की दा'वत दे तो मौक़अ़ की मुना-सबत से उस की दिलजूई की ख़ात़िर रोज़ए नफ़्ल तर्क कर देना मुनासिब है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ बचपन में ह़दीस सुन कर याद कर ली

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़वराअ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **ह़सन बिन अ़ली** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से पूछा : आप को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी हुई कोई ह़दीस याद है ? फ़रमाया : येह ह़दीस याद है कि (बचपन में) एक मर्तबा मैं ने स-दक़े (या'नी ज़कात) की खजूरों में से एक खजूर उठा कर मुंह में डाल ली तो नानाजान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे मुंह से वोह खजूर निकाली और स-दक़े की खजूरों में वापस रख दी। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर एक खजूर इन्हों ने उठा ली तो इस में क्या ह़रज है ? प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اِنَّا اٰلُ مُحَمَّدٍ لَا تَحِلُّ لَنَا الصَّدَقَةُ या'नी हम आले मुह़म्मद के लिये स-दक़े का माल ह़लाल नहीं है। (اسد الغابۃ ج۲ ص۱۶)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **मिरआत** जिल्द 3 सफ़ह़ा 46 पर लिखते हैं : "अपनी ना समझ औलाद को भी ना जाइज़ काम न करने दे। वोह देखो ! ह़ज़रते **ह़सन** (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) उस वक़्त बहुत ही कमसिन (या'नी कम उ़म्र) थे मगर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें भी ज़कात का छुहारा (या'नी सूखी खजूर) न खाने दिया।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने प्यारे नवासे सय्यिदुना इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की कैसी प्यारी तरबियत फ़रमाई ! इस रिवायत में हमारे लिये येह म-दनी फूल है कि बच्चों की तरबियत इब्तिदाई उ़म्र से ही करनी चाहिये । उ़मूमन देखा जाता है कि वालिदैन बच्चे की तरबियत का सह़ीह़ ह़क़ अदा नहीं करते और बचपन में अच्छे बुरे की तमीज़ नहीं सिखाते और जब वोही औलाद बड़ी हो जाती है तो फिर ऐसे वालिदैन अपनी औलाद की ना फ़रमानी का रोना रोते नज़र आते हैं । मां बाप को चाहिये कि बचपन ही से अपनी औलाद की तरबियत शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ करें । बच्चा समझ कर उन्हें छूट न दें और न येह कह कर उन की तरबियत को नज़र अन्दाज़ करें कि अभी तो बच्चा है जब बड़ा होगा तो ख़ुद समझ जाएगा ।

बच्चों को अच्छा अदब सिखाओ

बच्चों की अच्छी तरबियत के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : अपनी औलाद के साथ ह़ुस्ने सुलूक करो और उन्हें अच्छा अदब सिखाओ । (ابن ماجه ج٤ ص١٨٩ حديث٣٦٧١)

तुम से तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने एक शख़्स से फ़रमाया : अपने बच्चे की अच्छी तरबियत करो क्यूं कि तुम से

तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जाएगा कि तुम ने उस की कैसी तरबियत की और तुम ने उसे क्या सिखाया ? (شعب الایمان ج ٦ ص ٤٠٠ حدیث ٨٦٦٢ ملخصاً)

ख़ू मिटे बेकार बातों की, रहे
लब पे ज़िक्रुल्लाह मेरे दम बदम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾15﴿ हाथों हाथ ज़रूरत पूरी कर दी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में एक साइल ने ह़ाज़िर हो कर तह़रीरी दर-ख़्वास्त पेश की। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बिग़ैर पढ़े फ़रमाया : तुम्हारी ज़रूरत पूरी की जाएगी। अ़र्ज़ की गई : ऐ नवासए रसूल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ! आप ने उस की दर-ख़्वास्त पढ़ कर जवाब दिया होता। इर्शाद फ़रमाया : जब तक मैं उस की दर-ख़्वास्त पढ़ता वोह मेरे सामने ज़िल्लत की ह़ालत में खड़ा रहता फिर अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से पूछता कि तूने साइल को इतनी देर खड़ा रख कर क्यूं ज़लील किया ? तो मैं क्या जवाब देता ?

(احیاء العلوم ج ٣ ص ٣٠٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾16﴿ दस हज़ार दिरहम से नवाज़ दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पहलू में बैठ कर एक आदमी एक बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दस हज़ार दिरहम का सुवाल कर

रहा था, जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस ह़ाजत मन्द की येह दुआ सुनी तो फ़ौरन अपने घर तशरीफ़ लाए और उस शख़्स के लिये 10 हज़ार दिरहम भिजवा दिये। (ابن عساکر ج۱۳ ص۲۴۵)

मेरा दिल करता है मैं भी ह़ज करूं

हो अ़त़ा ज़ादे सफ़र चश्मे करम !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾17﴿ ह़ाजी पर एह़सान करने वाले बख़्श दिये जाते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हारून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मर्तबा हम ह़ज के इरादे से निकले, जब मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا पहुंचे तो (ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे) **ह़सन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ियारत के लिये भी ह़ाज़िर हुए, सलाम व दुआ के बा'द सफ़रे ह़ज के ह़ालात अ़र्ज़ किये। जब हम वापस आने लगे तो (सय्यिदुना इमाम) **ह़सन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हम में से हर शख़्स के लिये चार चार सो दिरहम भिजवाए। हम ने रक़म लाने वाले साह़िब से कहा : हम तो मालदार व दौलत मन्द हैं, हमें इस की ह़ाजत नहीं। उस ने कहा : आप ह़ज़रात (इमामे) **ह़सन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की भलाई को वापस न लौटाइये। फिर हम (ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे) **ह़सन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए और अपनी मालदारी के बारे में अ़र्ज़ किया। फ़रमाया : मेरे अ़-मले ख़ैर (या'नी भलाई के काम) को वापस मत कीजिये, अगर मेरी मौजूदा ह़ालत ऐसी न

होती तो येह (रक़म क़बूल न करना) तुम्हारे लिये आसान होता, मैं तो आप ह़ज़रात को ज़ादे राह पेश कर रहा हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़रफ़े के दिन अपने बन्दों के मु-तअ़ल्लिक़ फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़्र फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाता है : मेरे बन्दे परागन्दा ह़ाल (या'नी हैरानो परेशान) मेरी बारगाह में रह़मत के सुवाली बन कर ह़ाज़िर हैं, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने इन पर एह़सान करने वाले को बख़्श दिया, इन से बुरा सुलूक करने वाले के ह़क़ में इन के मोह़सिन (या'नी एह़सान करने वाले) की शफ़ाअ़त क़बूल की। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जुमुए़ के दिन भी इसी त़रह़ फ़रमाता है। (ابن عساکر ج۱۳ص ۲٤۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾18﴿ मेहमान नवाज़ बुढ़िया

ह़-सनैने करीमैन (या'नी ह़सन व ह़ुसैन) और अ़ब्दुल्लाह इब्ने जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِیْن तीनों ह़ज के लिये जा रहे थे, खाने पीने और सामान का ऊंट बहुत पीछे रह गया था। भूक प्यास से बेताब हो कर येह साह़िबान रास्ते में एक **बुढ़िया** के ख़ैमे (CAMP) पर गए और उस से फ़रमाया : हम को प्यास लगी है। उस ने एक बकरी का दूध निकाल कर इन तीनों को पेश किया। दूध पी कर इन्हों ने फ़रमाया : कुछ खाने के लिये लाओ ! बुढ़िया ने कहा कि खाने को तो कुछ मौजूद नहीं है आप इसी बकरी को ज़ब्ह़ कर के खा लीजिये। इन साह़िबान ने ऐसा ही किया, खाने पीने से फ़ारिग़ हो कर इन्हों ने कहा : हम क़ुरैशी हैं जब सफ़र से वापस

आएंगे तो तुम हमारे पास आना हम तुम्हारे इस एह़सान का बदला देंगे। येह कह कर येह तीनों साह़िबान आगे रवाना हो गए, जब उस **बुढ़िया** का शोहर आया तो नाराज़ हुवा कि तूने बकरी ऐसे लोगों की ख़ात़िर ज़ब्ह़ करा दी जिन से न हमारी वाक़िफ़िय्यत थी और न दोस्ती। इस वाक़िए़ को कुछ मुद्दत गुज़र गई। उस **बुढ़िया** और उस के ख़ावन्द को मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا जाने की ज़रूरत पड़ी, वोह वहां पहुंचे और ऊंट की मींगनियां चुन चुन कर बेचने लगे (ताकि अपना पेट भर सकें)। एक दिन येह **बुढ़िया** कहीं जा रही थी ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकाने आ़लीशान के क़रीब से गुज़री उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाज़े पर खड़े थे। बुढ़िया पर जूं ही नज़र पड़ी उस को पहचान लिया और उस से फ़रमाया : ऐ ख़ातून ! आप मुझे पहचानती हैं ? उस ने कहा : नहीं। आप ने फ़रमाया : मैं वोही हूं जो फ़ुलां रोज़ तुम्हारा मेहमान हुवा था। उस ने कहा : अच्छा आप वोह हैं ? इस के बा'द आप ने उस **बुढ़िया** को एक हज़ार बकरियां और एक हज़ार दीनार अ़त़ा फ़रमाए और अपने ग़ुलाम के हमराह उस को ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **बुढ़िया** से पूछा : ऐ ख़ातून ! मेरे भाई साह़िब ने आप को क्या दिया ? उस ने कहा : एक हज़ार बकरियां और एक हज़ार दीनार अ़त़ा फ़रमाए हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी इसी क़दर इन्आ़म उस को दिया और अपने ग़ुलाम के हमराह ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा। उन्हों ने **बुढ़िया** से दरयाफ़्त

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

किया : ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने आप को कितना माल दिया है ? उस ने कहा : दोनों ह़ज़रात ने दो हज़ार बकरियां और दो हज़ार दीनार इनायत फ़रमाए हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी उस को दो हज़ार दीनार और दो हज़ार बकरियां अ़त़ा फ़रमाईं। यूं वोह **बुढ़िया** चार हज़ार बकरियां और चार हज़ार दीनार ले कर अपने शोहर के पास पहुंची। (احیاء العلوم ج۳ص۳۰۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾19﴿ सब कुछ ख़ैरात कर दिया

राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, सय्यिदुल अस्ख़िया ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दो बार अपने घर का सारा और तीन मर्तबा आधा माल व अस्बाब राहे ख़ुदा में ख़र्च फ़रमाया।

(حلیۃ الاولیاء،ج۲ص۴۷حدیث۱۴۳۴)

ऐ सख़ी इब्ने सख़ी अपनी सख़ा
से दो ह़िस्सा सय्यिदे आ़ली ह़शम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿ शौक़े तिलावत

नवासए रसूल, च-मने मुर्तज़ा के जन्नती फूल, जिगर गोशए बतूल सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हर रात **सू-रतुल कह्फ़** की तिलावत फ़रमाया करते थे। येह मुबारक सूरत एक तख़्ती पर लिखी हुई थी, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी जिस ज़ौजा के पास तशरीफ़ ले

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है । (عبدالرزاق)

जाते येह मुबारक तख़्ती भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह होती ।

(شعب الایمان ج۲ص۴۷۵ حدیث۲۴۴۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾21﴿ मा 'मूलाते इमामे ह़सन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार मदीनतुल मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا के एक क़ुरैशी शख़्स से सय्यिदुना इमाम **ह़सन बिन अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! वोह नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाने के बा'द सूरज तुलूअ़ होने तक मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही में तशरीफ़ फ़रमा रहते हैं । फिर मुलाक़ात के लिये आए हुए मुअ़ज़्ज़ज़ीन से मुलाक़ात व गुफ़्त-गू फ़रमाते यहां तक कि कुछ दिन निकल आता, अब दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाते, इस के बा'द उम्महातुल मुअमिनीन की बारगाह में ह़ाज़िरी देते, सलाम पेश फ़रमाते, बा'ज़ अवक़ात उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ आप को कोई चीज़ तोह़फ़तन पेश फ़रमातीं । इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर तशरीफ़ ले आते । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम के वक़्त भी यूंही किया करते थे । फिर उस क़ुरैशी आदमी ने कहा : हम में कोई भी उन का हम-मर्तबा नहीं ।

(ابن عساکرج۱۳ ص۲۴۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

﴾22﴿ मदीना ता मक्का 20 बार पैदल सफ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : मुझे ह़या आती है कि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मुलाक़ात करूं कि उस के घर की त़रफ़ कभी न चला हूं। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه 20 बार मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से पैदल मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुए। (حلية الاولياء ج٢ص٤٦رقم١٤٣١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾23﴿ ग़ुलाम आज़ाद कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه एक मर्तबा चन्द मेहमानों के साथ खाना खा रहे थे, ग़ुलाम गर्म गर्म शोरबे का पियाला दस्तर ख़्वान पर ला रहा था कि उस के हाथ से पियाला गिरा जिस की वज्ह से शोरबे के छींटे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पर भी आए। येह देख कर ग़ुलाम घबराया और शरमिन्दगी भरे लहजे में उस ने **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 134 का येह ह़िस्सा तिलावत किया : وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ या'नी "ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : मैं ने मुआ़फ़ किया। ग़ुलाम ने फिर इसी आयत का आख़िरी ह़िस्सा पढ़ा : وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۚ﴿۱۳۴﴾ या'नी "नेक लोग **अल्लाह** के मह़बूब हैं।" आप

رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मैं ने तुझे **अल्लाह तआ़ला** की ख़ुशनूदी के लिये आज़ाद किया। (روح البیان ج۲ص ۹۵ملخّصا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿24﴾ अगर एक कान में गाली और दूसरे.....

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : لَوْاَنَّ رَجُلًا شَتَمَنِیْ فِیْ اُذُنِیْ هٰذِهٖ، وَاعْتَذَرَ اِلَیَّ فِیْ اُذُنِی الْاُخْرٰی لَقَبِلْتُ عُذْرَهٗ۔ या'नी अगर कोई मेरे एक कान में गाली दे और दूसरे कान में मुआ़फ़ी मांग ले तो मैं ज़रूर उस की मा'ज़िरत क़बूल करूंगा।

(بهجة المجالس وانس المجالس لابن عبدالبر ج۲ص۴۸۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿25﴾ नमाज़ के वक़्त रंग बदल जाता

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जूंही वुज़ू कर के फ़ारिग़ होते आप का रंग बदल जाता। इस की वज्ह पूछने पर फ़रमाया : जो शख़्स मालिके अ़र्श (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की बारगाह में ह़ाज़िरी का इरादा करे तो ह़क़ येही है कि उस का रंग बदल जाए।

(وفیات الاعیان ج۲ص۵۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿26﴾ कुत्ते पर शफ़्क़त करने वाला बा कमाल ग़ुलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मदीनतुल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के एक बाग़ में एक ऐसे सियाह फ़ाम (या'नी काले) ग़ुलाम को देखा जो एक लुक़्मा ख़ुद खाता और एक अपने कुत्ते को खिलाता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : तुम्हें इस बात पे किस ने उभारा ? उस ने अ़र्ज़ की : मुझे इस बात से ह़या (या'नी शर्म) आती है कि ख़ुद तो खाऊं लेकिन इसे न खिलाऊं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह बात बहुत पसन्द आई उस से इर्शाद फ़रमाया : मेरी वापसी तक यहीं ठहरना। येह फ़रमा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के मालिक के पास तशरीफ़ ले गए और उस से वोह ग़ुलाम और बाग़ ख़रीद फ़रमाया और ग़ुलाम को आज़ाद फ़रमा कर बाग़ उस को तोह़फ़े में दे दिया। ग़ुलाम भी अ़क़्ल मन्द था और राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की अहम्मिय्यत से आगाह था, लिहाज़ा उस ने फ़ौरन अ़र्ज़ की : يَامَوْلَايَ!قَدْ وَهَبْتُ الْحَائِطَ لِلَّذِي وَهَبْتَنِيْ لَهُ या'नी ऐ मेरे आक़ा ! मैं इस बाग़ को उसी की रिज़ा (या'नी ख़ुशनूदी) की ख़ातिर हिबा (Gift) करता हूं जिस की रिज़ा के लिये आप ने मुझे येह अ़ता फ़रमाया है।

(تاریخ بغداد ج٦ ص٣٣ رقم٣٠٥٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿27﴾ इमामे ह़सन मुज्तबा का ख़्वाब

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़मरान बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़्वाब देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों के दरमियान "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" लिखा

है। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह ख़ुश ख़बरी अपने अहले बैत को सुनाई। उन्हों ने जब येह वाक़िआ़ ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने बयान किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर वाक़ेई़ येह ख़्वाब देखा है तो इन की उ़म्र के चन्द ही दिन बाक़ी रह गए हैं। इस वाक़िए़ के कुछ दिन ही बा'द इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का विसाल हो गया। (الطبقات الكبير لابن سعد ج٦ ص٣٨٦ رقم٧٣٧٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾28﴿ ऐसी मख़्लूक़ पहले कभी नहीं देखी

वफ़ात के क़रीब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने देखा कि सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को घबराहट हो रही है। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन की तस्कीन के लिये अ़र्ज़ किया : भाईजान ! आप क्यूं रन्जीदा हैं ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में आप को अ़न्क़रीब ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब होगी और वोह दोनों आप के आबाअ (नानाजान और अब्बूजान) हैं, और ह़ज़रते ख़दी-जतुल कुब्रा, ह़ज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की बारगाह में ह़ाज़िरी होगी और वोह दोनों आप की उम्महात (नानीजान और अम्मीजान) हैं। ह़ज़रते क़ासिम व त़ाहिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का दीदार नसीब होगा और वोह आप के मामूं हैं और ह़ज़रते ह़म्ज़ा व जा'फ़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मुलाक़ात होगी और वोह

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

आप के चचा हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ऐ भाई ! आज मैं एक ऐसे मुआ़-मले में दाख़िल होने वाला हूं जिस में पहले कभी दाख़िल नहीं हुवा था और आज मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ल्क़ में से ऐसी मख़्लूक़ को देख रहा हूं जिस की मिस्ल मैं ने कभी नहीं देखी । (تاریخ الخلفاء ص۱۵۳ ملخّصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शहादत का सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ज़हर दिया गया । उस ज़हर का आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पर ऐसा असर हुवा कि आंतें टुकड़े टुकड़े हो कर ख़ारिज होने लगीं, 40 रोज़ तक आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को सख़्त तक्लीफ़ रही ।

वफ़ात ह़सरत आयात

इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद **ह़सन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने 5 रबीउ़ल अव्वल 50 हि. को मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में इस दारे ना पाएदार से रिह़लत फ़रमाई (या'नी वफ़ात पाई), اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ । (صفة الصفوة ج۱ ص۳۸۶) येह भी कहा गया है कि 49 हि. में वफ़ात हुई । ब वक़्ते शहादत ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की उ़म्र शरीफ़ 47 साल थी । (تقریب التھذیب لابن حجر عسقلانی ص ۲۴۰)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

﴾29﴿ नमाज़े जनाज़ा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई जो उस वक़्त मदीनतुल मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के गवर्नर थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़ुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जनाज़ा पढ़ाने के लिये आगे बढ़ाया। (الاستیعاب ج۱ص۴۴۲ملخّصاً)

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾30﴿ जनाज़े में लोगों का रश

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जनाज़े में इस क़दर जम्मे ग़फ़ीर (Crowd) था कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'लबा बिन अबी मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जनाज़े में शरीक हुवा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जन्नतुल बक़ीअ़ में (अपनी वालिदए माजिदा के पहलू में) दफ़्नाया गया, मैं ने जन्नतुल बक़ीअ़ में लोगों का इस क़दर इज़्दिहा़म (Crowd) देखा कि अगर सूई भी फेंकी जाती तो (भीड़भाड़ की वज्ह से) वोह भी ज़मीन पर न गिरती बल्कि किसी न किसी इन्सान के सर पर गिरती। (الاصابۃ ج۲ص۶۵)

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इमामे ह़सन की औलाद

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कसीर औलाद थी, इमाम इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप के शहज़ादों की ता'दाद 15 और साहिब ज़ादियों

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

की ता'दाद 8 लिखी है। (المنتظم ج٥ص٢٢٥) जब कि इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़ह़बी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के 12 शहज़ादों के नाम लिखे हैं : ह़सन, ज़ैद, त़ल्ह़ा, क़ासिम, अबू बक्र और अ़ब्दुल्लाह इन छ[6] ने अपने चचाजान सय्यिदुश्शु-हदा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ मैदाने करबला में जामे शहादत नोश किया। बक़िय्या छ[6] येह हैं : अ़म्र, अ़ब्दुर्रह़मान, हुसैन, मुह़म्मद, या'क़ूब और इस्माईल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आल (या'नी ह़-सनी सय्यिदों) का सिल्सिला ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन मुसन्ना और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से चला। (سیر اعلام النبلاء ج٤ص٤٠١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा के पड़ोस का त़ालिब
र-मज़ानुल मुबारक 1438 सि.हि.
जून 2017 ई.

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
(1) ख़ुश्क दरख़्त पर ताज़ा खजूरें	1	तुम से तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जाएगा	16
(2) विलादत से क़ब्ल बिशारत	2	(15) हाथों हाथ ज़रूरत पूरी कर दी	17
विलादते बा सआ़दत व नाम व अल्क़ाब	3	(16) दस हज़ार दिरहम से नवाज़ दिया	17
हम-शक्ले मुस्त़फ़ा	4	(17) ह़ाजी पर एह़सान करने वाले	
ऐसा बेटा किसी मां ने नहीं जना !	4	बख़्श दिये जाते हैं	18
शफ़्क़ते मुस्त़फ़ा मरह़बा ! मरह़बा !	4	(18) मेहमान नवाज़ बुढ़िया	19
(3) राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा	5	(19) सब कुछ ख़ैरात कर दिया	21
(4) अबू हुरैरा देखते तो रो पड़ते	5	(20) शौक़े तिलावत	21
(5) ऐ मेरे सरदार !	6	(21) मा'मूलाते इमामे ह़सन	22
(6) येह मेरा फूल है	7	(22) मदीना ता मक्का 20 बार पैदल सफ़र	23
(7) मेरा येह बेटा सरदार है	8	(23) ग़ुलाम आज़ाद कर दिया	23
(8) इमामे ह़सन मुज्तबा की ख़िलाफ़त	9	(24) अगर एक कान में गाली और दूसरे......	24
(9) इमामे ह़सन मुज्तबा का ख़ुत़्बा	9	(25) नमाज़ के वक़्त रंग बदल जाता	24
(10) दुन्या की शर्म अ़ज़ाबे आख़िरत से बेहतर है	10	(26) कुत्ते पर शफ़्क़त करने वाला बा कमाल ग़ुलाम	24
सब से पहले ग़ौसे आ'ज़म	10	(27) इमामे ह़सन मुज्तबा का ख़्वाब	25
ख़िलाफ़ते राशिदा	11	(28) ऐसी मख़्लूक़ पहले कभी नहीं देखी	26
(11) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस से		शहादत का सबब	27
मह़ब्बत करता हूं	12	वफ़ात ह़सरत आयात	27
(12) मुन्ने की पैदाइश	12	(29) नमाज़े जनाज़ा	28
(13) सुरमा व ख़ुश्बू से मेहमानी	14	(30) जनाज़े में लोगों का रश	28
(14) बचपन में ह़दीस सुन कर याद कर ली	15	इमामे ह़सन की औलाद	28
बच्चों को अच्छा अदब सिखाओ	16	या ह़सन इब्ने अ़ली ! कर दो करम	31

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرانِ کریم		تاریخ المدینۃ المنورۃ	دارالفکر بیروت	الاصابۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
روح البیان	داراحیاء التراث العربی بیروت	تاریخ بغداد	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تقریب التھذیب	دارالعاصمۃ الریاض
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الاستیعاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تاریخ الخلفاء	باب المدینہ کراچی
ترمذی	دارالفکر بیروت	بہجۃ المجالس	دارالکتب العلمیۃ بیروت	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	المنتظم	دارالکتب العلمیۃ بیروت	شواھد النبوۃ	مکتبۃ الحقیقیہ استنبول
الادب المفرد	مصر	صفۃ الصفوۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الذریۃ الطاھرۃ	الکویت
مسند بزار	مکتبۃ العلوم والحکم مدینۃ المنورہ	ابن عساکر	دارالفکر بیروت	احیاء العلوم	دارصادر بیروت
المستدرک	دارالمعرفۃ بیروت	وفیات الاعیان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	برکاتِ الِ رسول	ضیاء القران پبلیکیشنز مرکز الاولیا لاہور
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	اسد الغابۃ	داراحیاء التراث العربی بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت	سبل الھدیٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الطبقات الکبیر	مکتبۃ الخانجی قاھرۃ	سیر اعلام النبلاء	دارالفکر بیروت	سوانح کربلا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

या ह़सन इब्ने अ़ली ! कर दो करम

राकिबे दोशे शहन्शाहे उमम
या ह़सन इब्ने अ़ली ! कर दो करम !

फ़ात़िमा के लाल ह़ैदर के पिसर !
अपनी उल्फ़त दो मुझे दो अपना ग़म

अपने नाना की महब्बत दीजिये
और अ़त़ा हो क़ल्बे मुज़्त़र चश्मे नम

ख़ू मिटे बेकार बातों की, रहे
लब पे ज़िक्रुल्लाह मेरे दम बदम

ऐ सख़ी इब्ने सख़ी अपनी सख़ा
से दो ह़िस्सा सय्यिदे आ़ली ह़शम

आलो अस्ह़ाबे नबी से प्यार है
सारी सरकारों के दर पर सर है ख़म

पेश्वाए नौ जवानाने बिहिश्त
हैं मुह़म्मद के नवासे ला जरम

या ह़सन ! ईमां पे तुम रहना गवाह
अ़ब्दे ह़क़ हूं ख़ादिमे शाहे उमम

आह ! पल्ले में कोई नेकी नहीं
अ़र्सए महशर में रख लेना भरम

मेरा दिल करता है मैं भी ह़ज करूं
हो अ़त़ा ज़ादे सफ़र चश्मे करम !

त़यबा देखे इक ज़माना हो गया
या ह़सन ! दिखला दो नाना का ह़रम

जज़्बा दो "नेकी की दा'वत" का मुझे
राहे ह़क़ में मेरे जम जाएं क़दम

मैं सदा दीनी कुतुब लिखता रहूं
या ह़सन ! दे दीजिये ऐसा क़लम

दीन की ख़िदमत का जोशो वल्वला
हो इनायत या इमामे मोह़तरम !

ऐ शहीदे करबला के भाईजान !
दूर हों अ़त्तार के रन्जो अलम

अल्फ़ाज़ व मआ़नी :- राकिब : सुवार । **दोश :** कन्धा । **लाल :** बेटा । **पिसर :** बेटा । **मुज़्त़र :** बे क़रार । **चश्मे नम :** रोती आंख । **ख़ू :** आ़दत । **लब :** ज़बान । **दम बदम :** हर वक़्त । **सख़ा :** सख़ावत । **आ़ली ह़शम :** बहुत बुज़ुर्गी वाला । **ख़म :** झुका हुवा । **अ़र्सए महशर :** क़ियामत का मैदान । **भरम :** लाज । **सदा :** हमेशा । **वल्वला :** बहुत ज़ियादा शौक़ । **अलम :** ग़म ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَاءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
ISBN
0133021

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net